लोग हमसे कहते है आगे बढ़ो दुनिया कहाँ जा रही है ?
हम कहते हैं चलो 1400 साल पहले चलते हैं। अहद-ए-नबवी की ठंडक लेने की कोशिश करते है तरक्की वहीं से मिलेगी।
Let us go before 1400 years.

Wednesday, August 26, 2020 بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ **Publication S.N : 00000141**

شوقِ عبادت:

(5128)...حضرتِ سیِّدُنا عمرو بن میمون رَحمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیۡہِ جب بوڑھے ہوگئے تو آپ نے اپنے لیے دیوار میں ایک کیل ٹھوک دی، لہٰذا جب لمبی نماز پڑھتے پڑھتے تھک جاتے تو اسے مضبوطی سے پکڑ لیتے یا پھر اس کے ساتھ رسی باندھ کر اس کے سہارے کھڑے ہو جاتے۔

शोक-ए-इबादत

(5128)...हज़रत-ए-सय्यिदुना अमरो बिन मैमून रहमतुल्लाह तआला अलिह जब बूढ़े हो गए तो आपने अपने लिए दीवार में एक कील ठोक दी, लिहाज़ा जब लंबी नमाज़ पढ़ते पढ़ते थक जाते तो उसे मज़बूती से पकड़ लेते या फिर उस के साथ रस्सी बांध कर उस के सहारे खड़े हो जाते।

हीलियतुल औलिया व तबक़ातुल-अस्फिया, जिल्द-4, स.193